सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय,अजमेर

एक भारत श्रेष्ठ भारत

प्रतिवेदन–(31अक्टूबर2021–30अप्रैल,2022)

प्रभारी – डॉ. लता अग्रवाल

भारत एक अनूठा राष्ट्र है जिसका ताना-बाना विभिन्न भाषाई द्वारा बुना गया है।सांस्कृतिक और धा र्मक सूत्र एक समग्र राष्ट्रीय पहचान में एक साथ जुड़े हुए हैं।सांस्कृतिक वकास के एक समृद्ध इतिहास के साथ-साथ एक जोशीला स्वतंत्रता संग्राम जिसे अहिंसा और न्याय के सद्धांतों के इर्द- गर्द बनाया गया था। आपसी की भावनाएक साझा इतिहास के बीच समझ ने व वधता में एक वशेष एकता को सक्षम बनाया हैजो राष्ट्रीयता की एक लंबी लौ के रूप में सामने आती है जिसे पो षत करने की आवश्यकता है एक ऐसे युग में जो गतिशीलता और आउटरीच की सु वधा प्रदान करता हैयह है व भन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान स्था पत करने के लए महत्वपूर्ण मानव संबंधों को आगे बढ़ाने और राष्ट्र निर्माण के लए एक सामान्य दृष्टिकोण के साधन के रूप में। आपसी समझ और वश्वास है भारत की ताकत की नींवऔर सभी नागरिकों को भारत के सभी कोनों में सांस्कृतिक रूप से एकीकृत महसूस करना चाहिए। नागरिकों के बीच एक सतत और संर चत सांस्कृतिक जुड़ाव का वचारप्रधानमंत्री द्वारा व भन्न क्षेत्रों के बारे में वचार कया गया I

राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर 2015 को जन्म के उपलक्ष्य में आयोजित कया गया सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने प्रतिपादित कया सांस्कृतिक व वधता एक खुशी है जिसे पारस्परिक रूप से मनाया जाना चाहिए व भन्न राज्यों और केंद्र शा सत प्रदेशों के लोगों के बीच बातचीत और पारस्परिकता ता क समझ की सामान्य भावना पूरे देश में गूंजती है। हर राज्यऔर देश के केंद्र शा सत प्रदेशों को एक वर्ष के दौरान दूसरे राज्य/केंद्र शा सत प्रदेश के साथ जोड़ा जाएगाजिसमें वे एक दूसरे के साथ एक संर चत जुड़ाव करेंगेभाषा, साहित्य, व्यंजन, त्यौहार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पर्यटन आदि के क्षेत्र।सभी राज्यों द्वारा भागीदार राज्य क्षेत्र के सांस्कृतिक अंगीकरण का पालन कया जाएगा ।

इस प्रकार राष्ट्र में एकता की एक समृद्ध मूल्य प्रणाली हा सल करना।

उद्देश्य:

1.हमारे राष्ट्र की व वधता में एकता के उत्सव को मनाने और बनाए रखने के लएऔर परंपरागत रूप से वद्यमान भावनात्मक बंधनों के ताने-बाने को मजबूत करना

2.हमारे देश के लोगों के बीचराष्ट्रीय एकता की भावना को गहन और के माध्यम से बढ़ावा देनासभी भारतीय राज्यों और संघ के बीच संर चत जुड़ाव बनाए रखने

3.समृद्ध वरासत और संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं को प्रद र्शत करने के लएलोगों को समझने और उनकी सराहना करने में सक्षम बनाने के लए कसी भी राज्य की व वधता जो भारत है, इस प्रकार सामान्य पहचान की भावना को बढ़ावा देती है

4. लंबी अव ध की व्यस्तताओं को स्था पत करने के लए और

5.ऐसा वातावरण बनाना जो राज्यों के बीच सीखने को बढ़ावा देता है सर्वोत्तम प्रथाओं और अनुभवों को साझा करके।

प्रमुख वषय:

• भारत के वचार को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में मनाने के लए जहां व भन्न सांस्कृतिक व भन्न भौगो लक क्षेत्रों में इकाइयाँ आपस में जुड़ती हैं और प्रत्येक के साथ परस्पर क्रया करती हैंअन्य व वध व्यंजनों, संगीत, नृत्य की यह शानदार अ भव्यक्ति, हस्त शल्प, खेल, साहित्य, त्योहार,पेंटिंग, मूर्तिकला आदि लोगों को जन्मजात राग को आत्मसात करने में सक्षम बनाएंगेबंधन और भाईचारे का।

• हमारे लोगों को आधुनिक के निर्बाध अ भन्न पतवार के बारे में जागरूक करने के लए भारत राज्य एक वशालभूभाग में फैला हुआ है जिसकी नींव, देश की भू-राजनीतिक ताकत को सुनिश्चित कया जाता है एक और सभी को लाभान्वित करें।

• व भन्न संस्कृतियों के घटकों के बीच बढ़ते अंतर्संबंधों के बारे में व्यापक रूप से लोगों को प्रभा वत करना औरपरंपराएं, जो राष्ट्र-निर्माण की भावना के लए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

• राष्ट्र के लए जिम्मेदारी और स्वा मत्व की भावना को प्रेरित करने के लए इन करीबी क्रॉस-सांस्कृतिक अंतः क्रयाओं के माध्यम से, जैसा क यह करना चाहता हैस्पष्ट रूप से अंतर-निर्भरता मैट्रिक्स का निर्माण करें।छात्रों में भाषाई औररचनात्मक क्षमताए' वक सत हो।

31 अक्टूबर2020 (राष्ट्रीय एकता दिन)

छात्रों के लए मंच साझा करनायह एक सामान्य कुल मलाकर अनुभव करने के लए।

आयोजित गति व धयों का ववरण:

1. छात्रों को अक्षर, गीत, कहावत वर्णमाला, राज्य क्षेत्र की भाषाओं में वाक्य।

2. भाषा में छात्रों के बीच निबंध प्रतियो गता वद्या र्थयों द्वारा शपथ ग्रहण : वद्यार्थी संकल्प लियास्वच्छता/एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक/पानी की बचत/साझेदारी में राष्ट्रीय एकता राज्य की भाषा पर प्रतिज्ञा के लए कर्तव्यों और जिम्मेदारी के साथ राज्य क्षेत्रों में कया जाएगा अपने साथी राज्य को जानें- भागीदारी पर "प्रश्न/उत्तर सत्र" जिससे छात्रों की अ धकतम भागीदारी सुनिश्चित हो सकी।

"प्रश्न/उत्तर सत्र" राजस्थान का स्थापना दिवस–30 मार्च कुल उपस्थिति–58

I. भागीदार राज्य क्षेत्र के नाम का शाब्दिक अर्थ क्या है?

II पार्टनरिंग स्टेट में कौन सी भाषा बोली जाती है?

III. भागीदार राज्य की राजधानी क्या है?

IV भागीदार राज्य की जनसंख्या कतनी है?

V. भागीदार राज्य में बहने वाली प्रमुख नदियाँ कौन सी हैं?

VI. साझेदार राज्य में कौन से त्यौहार मनाए जाते हैं?

VII राज्य में महत्वपूर्ण स्थान कौन से हैं? (राष्ट्रीय उद्यान, वरासत या ऐतिहा सक स्थल आदि)

VIII राज्य का पशु/पक्षी क्या है?

राज्य दिवस समारोह: जिसमें समूह नृत्य, समूह गायन, भाषण भागीदारी राज्य आदि पर छात्रों द्वारा प्रदर्शन कया जाएगा।

असम का स्थापना दिवस–2 दिसम्बर,राजस्थान का स्थापना दिवस–30 मार्च

सांस्कृतिक प्रतियो गता (लोक गीत,नृत्य, कला एवं चत्रकला, संगीत सांस्कृतिक गति व धयों पर प्रदर्शन कया ।

इसे 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस या 26 जनवरी, गणतंत्र दिवस के समारोह के साथ जोड़ा जा सकता है "साहित्यिक उत्सव" (प्रश्नोत्तरी प्रतियो गता, क वता, एक्सटेम्पोर, भाषण, वाद-ववाद,और लोक प्रय क्षेत्रीय ल प का अनुवाद):

वीडियो द्वारा दोनों राज्यों की संस्कृतियों का प्रदर्शन कर अवगत कराया गया।

महापुरूषों की जयन्ती आयोजित कर छात्रों को उनके द्वारा देश की रक्षार्थ किये गये कार्यो से अवगत करवाकर चित्र,पोस्टर,निबंध,संवाद,कविता व स्लोगन लिखवाकर प्रेरित करना।

राजस्थान–असम

1- राजस्थान • राजस्थान उत्तर भारत का एक राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल 342,239 वर्ग कलोमीटर (132,139 वर्ग मील) या भारत के कुल भौगो लक क्षेत्र का 10.4 प्रतिशत है। यह क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे बड़ा भारतीय राज्य है और जनसंख्या के हिसाब से सातवां सबसे बड़ा राज्य है।

2. असम •असम पूर्वोत्तर भारत में एक राज्य है, जो ब्रह्मपुत्र और बराक नदी घाटियों के साथ पूर्वी हिमालय के द क्षण में स्थित है। असम 78,438 कमी 2 के क्षेत्र को कवर करता है। यह दुनिया के सबसे अ धक आबादी वाले उपखंडों में से एक है। अस मया असम की राजभाषा है

3. भोजन राजस्थान राजस्थान अपने व्यंजनों के लए प्र सद्ध है। इसका व्यंजन इसके निवा सयों की जीवन शैली और इस शुष्क क्षेत्र में सामग्री की उपलब्धता पर निर्भर था। भोजन जो कई दिनों तक चल सकता था और बिना गर्म कए खाया जा सकता था, को प्राथ मकता दी गई। दाल बाटी चूरमा मोहन थल गट्टे की सब्जी मर्ची वड़ा पापड़ की सब्जी असम असमी व्यंजन असम का व्यंजन है। यह खाना पकाने की एक शैली है जो पहा ड़यों की खाना पकाने की आदतों का संगम है जो संरक्षण के रूपों के रूप में कण्वन और सुखाने का पक्ष लेते हैं और मैदानी इलाकों से हैं जो ताजी सब्जियां और मछली और मांस की प्रचुरता प्रदान करते हैं। आलू पटिका ओ खट्टा पठा खर मसूर तेंगा ।

4. त्यौहार -: तीज-यह राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह पूरी भव्यता, पारंपरिक गीतों और नृत्य, मेले और देवी तीज की पूजा के साथ मनाया जाता है। गणगौर- यह राजस्थान में महिलाओं द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। पूरे शहर में एक अलंकृत देवी गौरी के जुलूस निकाले जाते हैं। मकर संक्रांति- यह हिंदू कैलेंडर में देवता सूर्य (सूर्य) को सम र्पत एक त्योहार का दिन है। यह हर साल 14 जनवरी के चंद्र महीने में मनाया जाता है। असम - बिहू त्योहार-बिहू असम का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है। यह सभी अस मया लोगों द्वारा खुशी और बहुतायत के साथ मनाया जाता है। देहिंग पटकाई चाय महोत्सव - यह त्यौहार साल में एक बार असम के तिनसु कया जिले के लेखपानी में आयोजित कया जाता है। यह असम सरकार द्वारा पर्यटकों को मौज-मस्ती और दावत के लए असीम अवसर प्रदान करने के लए आयोजित कया जाता है। अंबुबाची मेला- यह सबसे प्र सद्ध मेला है जो गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर में आयोजित कया जाता है। हिंदू मान्यताओं और परंपराओं के अनुसार इस मेले का वशेष महत्व है।वेशभूषा और आभूषण राजस्थान परंपरागत रूप से राजस्थान में पुरुष धोती, कुर्ता, अंगरखा, और पगगर या साफा (पगड़ी टोपी की तरह) पहनते हैं। पारंपरिक चूड़ीदार पायजामा (पके हुए पतलून)। महिलाएं घाघरा (लंबी स्कर्ट) और कांचली (शीर्ष) पहनती हैं। हालां क, वशाल राजस्थान की लंबाई और सांसों और सांसों के साथ पोशाक शैली बदलती है। राजस्थान के कुछ आभूषण हैं- राखड़ी/शीशफूल/बोरला, नाथ, सुर लया/कानबली और झाले, आद या कंठी हार, बाजूबंध, बंगाडी असम। महिलाएं मोटिफ से भरपूर मेखला चादोर या रिहा-मेखला पहनती हैं। पुरुष 'सूरिया' या 'धोती' पहनते हैं, और इसके ऊपर, वे 'सेलेंग' के नाम से जाना जाने वाला एक चादर लपेटते हैं। अस मया पुरुष धोती-गमोसा पहनते हैं जो उनकी पारंपरिक पोशाक है। असम के कुछ आभूषण हैं- गोलपता जपी: पेपा गम खारू थुरिया केरुमोनी दुग्दुगी

5. वास्तुकला राजस्थान की वास्तुकला मुख्यतः राजपूत शैली की वास्तुकला पर आधारित है जो मुगल और हिंदू संरचनात्मक योजना का एक वर्गीकरण था। राजस्थान की स्थापत्य वरासत का प्रतीक कुछ प्र सद्ध संरचनाएं हैं: दिलवाड़ा मंदिर चत्तौड़गढ़ कला जल महल सटी पैलेस जैसलमेर हवे लयाँ असम असम-प्रकार की वास्तुकला भारत में असम राज्य में

वक सत एक शैली है। देर से आधुनिक काल। यह असम और सलहट क्षेत्र में पाया जाता है। इस शैली का उपयोग करके बनाए गए घरों को आम तौर पर एक या अ धक मंजिलों वाले असम-प्रकार के घरों के रूप में जाना जाता है। कुछ प्र सद्ध संरचनाएं जो असम की स्थापत्य वरासत का प्रतीक हैं- रंग घर। करेंग घर। चराईदेव। तलाताल घर।

6. कला के रूप- (नृत्य/संगीत) राजस्थान घूमर नृत्य- यह राजस्थान का एक पारंपरिक लोक नृत्य और राजस्थान का राज्य नृत्य है। गैर-यह लोक प्रय, प्र सद्ध और लोक नृत्यों में से एक है जो राजस्थान में भील समुदाय द्वारा कया जाता है। मांड- यह राजस्थान की सबसे लोक प्रय संगीत शै लयों में से एक है। यह संगीत रूप भारत में व भन्न रागों के शास्त्रीय स्पर्श के लए जाना जाता है। असम बिहू- असम का सबसे लोक प्रय लोक नृत्य है। बिहू उत्सव के दौरान युवा लड़के और लड़ कयों द्वारा बिहू नृत्य कया जाता है। सतरिया नृत्य- असम का शास्त्रीय नृत्य रूप है जो सतरिया संस्कृति का प्रतिनि धत्व करता है, जो असम के धा र्मक और सांस्कृतिक ताने-बाने का आधार है। असम के स्वदेशी संगीत में बिहू गीत, बोडो, कार्बी और म संग गीत शा मल हैं जो सभी संर चत हैं और चीन के पारंपरिक संगीत के समान पेंटाटोनिक पैमाने पर गाए जाते हैं।

7-संस्कृति • राजस्थान के रीति-रिवाज और परंपराएं इन वैदिक संस्कारों और अनुष्ठानों का राजस्थानी संस्करण हैं। राजस्थानी लोगों ने जन्म से लेकर मृत्यु तक हर स्तर पर वेदों की उक्ति का धा र्मक रूप से पालन कया है। उन्होंने इन वैदिक समारोहों में कुछ क्षेत्रीय संस्कारों और अनुष्ठानों को जोड़ा है। वेदों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ संस्कारों को संस्कार के रूप में जाना जाता है। असम: असम में शादियों, जन्म, मृत्यु और त्योहारों में कई रीति-रिवाज शा मल हैं जिनका पालन सभी को करना चाहिए। उदाहरण के लए, अस मया बांस संस्कृति से लगाव के कारण मेहमानों का स्वागत करने के लए बांस का उपयोग करते हैं। जापी के रूप में जाना जाता है, यह मूल रूप से असम के सनशेड के रूप में जाना जाता है।

8. जलवायु- (वनस्पति और जीव) राजस्थान में वनस्पतियों और जीवों की एक समृद्ध व वधता है। प्राकृतिक वनस्पति को उत्तरी रे गस्तान कांटेदार वन के रूप में वर्गीकृत कया गया है। ये कमोबेश खुले रूप में बिखरे हुए छोटे गुच्छों में होते हैं। इस राज्य में देखी जाने वाली सबसे वपुल वनस्पति केजरी या प्रोसो पस सनेरिया है। असम में वनस्पतियों और

जीवों की एक समृद्ध व वधता है। स्थानिक वनस्पति वे पौधे हैं जो एक प्रतिबं धत क्षेत्र में पाए जाते हैं। असम में पौधों की कुल मलाकर 165 प्रजातियों को दर्ज कया गया है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

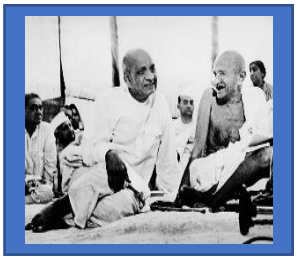

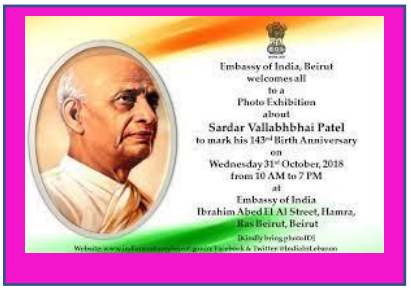

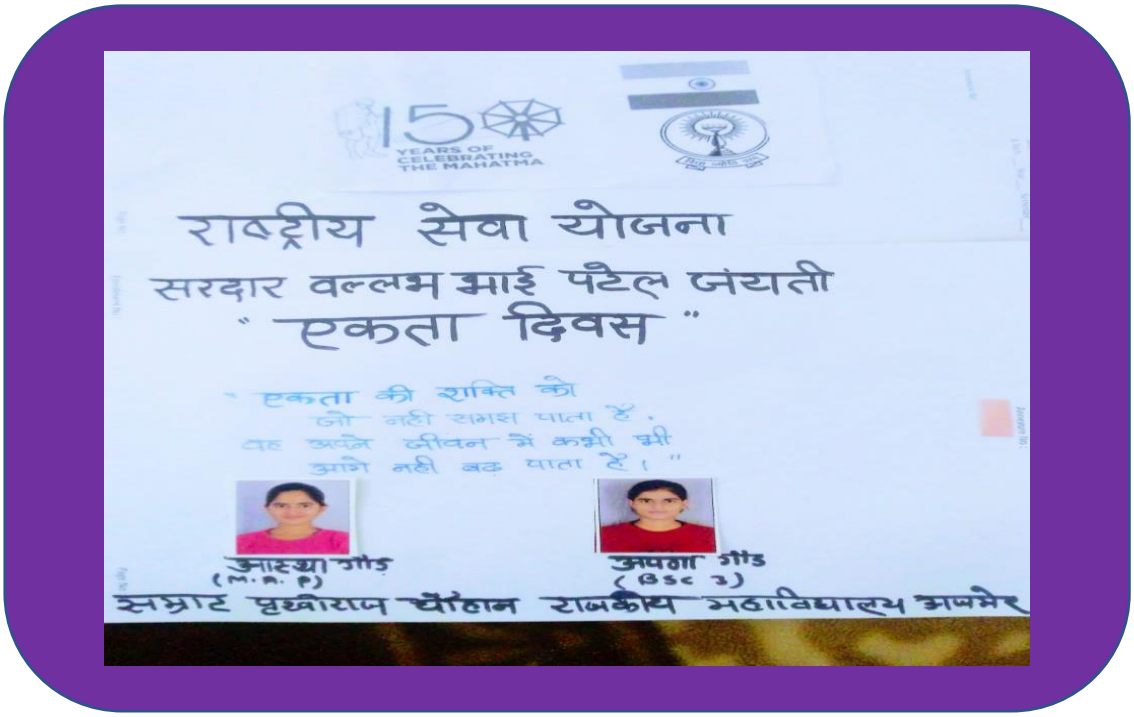

स्लोगन प्रतियोगिता

सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती दिवस 31 अक्टूबर 2021 एकता दिवस

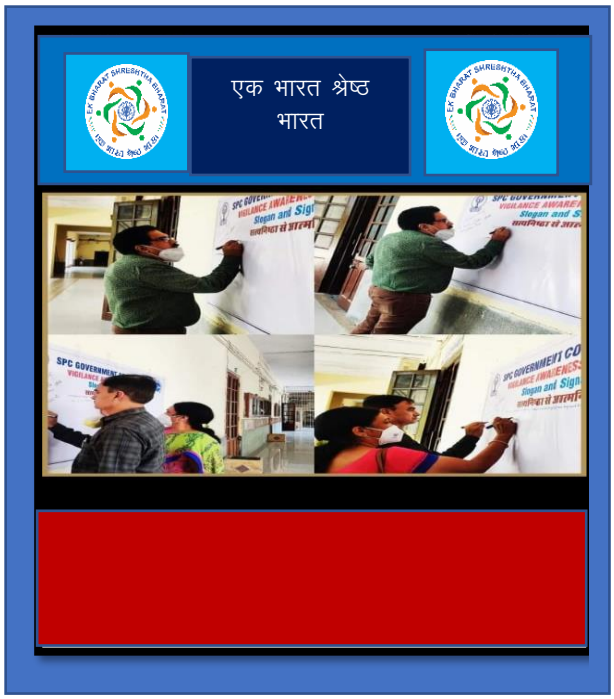

सत्य निष्ठा से आत्मनिर्भरता की ओर स्लोगन व हस्ताक्षर

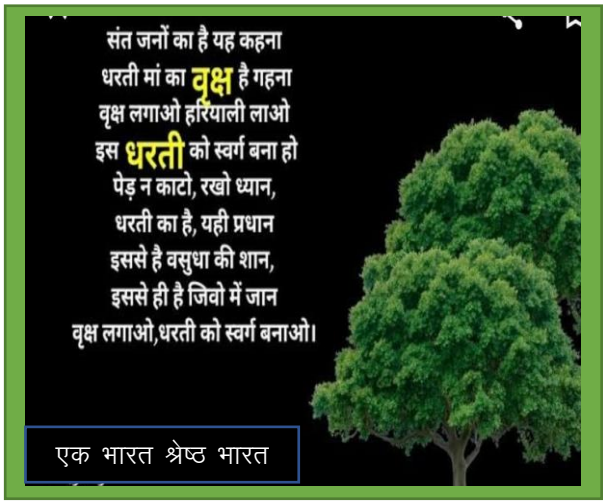

5 नवम्बर 2021 हरियालो राजस्थान

2 दिसम्बर,2021 को असम राज्य के स्थापना दिवस पर ड़ॉ जितेन्द्र मारोठिया व ड़ॉ लता अग्रवाल द्वारा असम राज्य की सांस्कृतिक धरोहर व अन्य विषयों के संबंध में प्रश्न पूंछे गये व पारस्परिक संवाद किया गया जिसमें छात्र–दात्राओं ने उत्साह से भाग ि

6 दिसम्बर 2021

राजस्थान– असम

भोजन संस्कृति

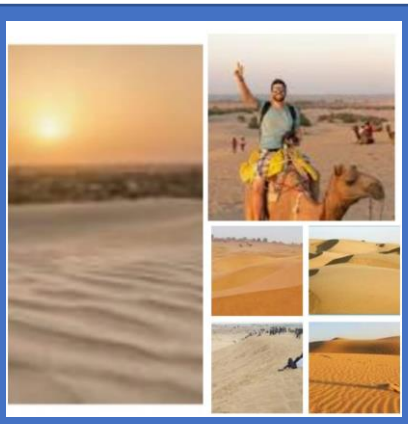

7 दिसम्बर,2021 को राजस्थान की मरूस्थलीय संस्कृति में मृदा के धोरे (Dunes) व असम के चाय बागानों के संबंध में तथा पुष्कर की केमल सफारी के बारे में छात्रा आस्था गौड ने PPT के द्वारा राजस्थान व असम की संस्कृति की जानकारी दीगई

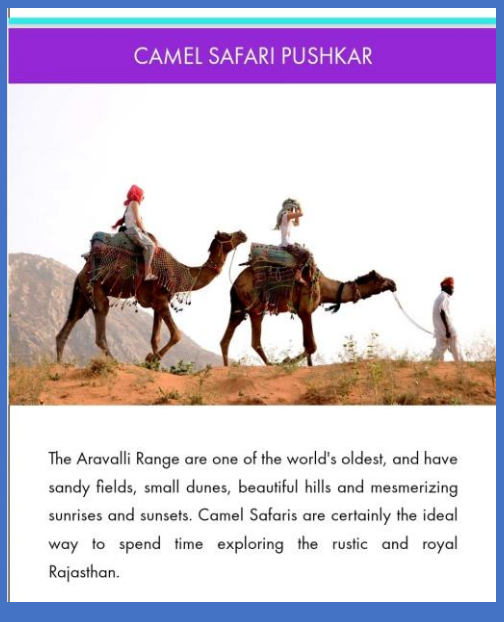

7व 8 जनवरी,2022 को छात्र–छात्राओं द्वारा राजस्थान व असम संस्कृति कीराजपूती और असम की पोशाकों के द्वारा प्रस्तुत कर प्रदर्शित किया।

8 व 9 फरवरी को छात्र–छात्राओं द्वारा राजस्थान–असम संस्कृति के विभिन्न आयामों – भोगोलिक,सामाजिक,धार्मिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक विषयों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमके अर्न्तगत परिचर्चा हुई जिसमें सभीछात्र.–छात्राओं ने बड़े उत्साह से अपने विचार प्रस्तुत किये।

8 मार्च को प्रचार्य जी द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक को प्रतिबंध reduce plastic use शपथ दिलवाई

Less plastic,clean earth healthy animal and human

24 मार्च,2022 को राजस्थान का युग्म राज्य असमकी मिलीजुली संस्कृति को वीडियो द्वारा प्रदर्शित कर पारस्परिक समन्वितसंस्कृति को प्रस्तुत किया गया। सह–आचार्य डॉ अनूप अत्रे ने उत्तर व पूर्व की संस्कृति के पारस्परिक समन्वय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। डा लता अग्रवाल व ड़ॉ जितेन्द्र मारोठिया ने भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई एक नयी और प्रभावशाली योजना विविधता में एकता से प्रेरित योजना **एक भारत श्रेष्ठ भारत** जो देशभक्त व महान् स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके जन्म दिवस31अक्टूबर 2015 को **राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप** में प्रारम्भ की गई योजना है, पर विस्तार से संवाद कर राजस्थान–असम दोनों युगल राज्यों की संस्कृति,पर्यटन, परम्परा, भाषा,सामाजिक खान–पान,रहन–सहन,वेशभूषा,संस्कार व महिला सशक्तिकरण आदि विभिन्न विषयों को प्रोत्साहन देने के लिए परस्पर जुड़ेंगे पर बताया गया।

यह योजना भारत को विश्व पटल पर ONE INDIA SUPREEM INDIA के रूप में स्थापित करेगा। शान्ति और सद्भाव को विस्तार देने के लिए यह एक ठोस पहल हैं। भारत सरकार द्वारा इसे गतिशील बनाने के लिए संगीत, फूड फेस्टिवल, साहित्यिक, बुक फेस्टिवल और विभिन्न शिविरों का आयोजन के द्वारा लोकप्रिय बनायेगी।

30 मार्च को राजस्थान स्थापना दिवस पर दोनो राजस्थान–असम राज्यों का समन्वित संस्कृति पर सह–आचार्य डॉ अनूप अत्रे द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

28अप्रैल,2022 में विद्यार्थियों द्वारा सह –आचार्य डॉ ज़रफिशा के दिशा निर्देश में विशेषतः असम की संस्कृति को राजस्थान में विस्तार देकर व प्रचार–प्रसार करने व युवा वर्ग में इसकी महत्ता को प्रतिपादितकेलिए एक DisplayBoard बनाया गया जिसमें असम संस्कृति की पूर्ण झलक प्रदर्शित है।विद्यार्थियों ने बोर्ड पर हिन्दी, राजस्थानी,अंग्रेजी व असम भाषा व लिपि में दिनचर्या में प्रयोग होने वाले वाक्यों को लिखा गया है– नमस्ते,स्वागत,हैलो आदि अभिवादन।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

(राजस्थान–असम **विविधता में एकता की अवधारणा की समन्वित** संस्कृति काप्रतीक)

28–29 अप्रैल,2022

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एस. के. उपाध्याय जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि दोनों राज्यों के मध्य सांस्कृतिक सौहार्दता और माधुर्यता का प्रेम भाव पारस्परिक धर्म,साहित्य,वास्तुकला दोनों राज्यों के समृद्ध कैनवास को सही परिप्रेक्ष्य में चित्रित करता है,जो एक विशेष पहल है।विश्व में भारत संस्कृति के समृद्ध इतिहास वाला एक अनूठा राष्ट्र है। संस्कृति समाज को परस्पर जोड़कर समन्वय स्थापित करती है। विद्यार्थियों ने कैनवास पर असम का नक्शा और संस्कृति,राज्य के प्रतीक चिन्ह,प्रमुख पर्यटन स्थल,प्रसिद्ध व्यक्ति,भौगोलिक चिन्ह व आदर–सत्कार व अभिवादन आदि शब्दों से सज्जित किया गया है। एक भारत श्रेष्ठ भारत पर्यटन को प्रोत्साहित करने की एक प्रेरक योजना।

प्रभारी

ड़ॉ. लता अग्रवाल

(सह–आचार्य)